REVIEW OF RESEARCH

सामाजिक परिवर्त्तन तथा रूढ़िवादिता

डॉ. प्रिया कुमारी

एम० ए० (समाजशास्त्र), पी–एच० डी०
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

भूमिका

रूढ़िवाद सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत व्यवहृत एक ऐसी विचारधारा है जो पारंपरिक मान्यताओं का अनुकरण तार्किकता का वैज्ञानिकता के स्थान पर केवल आस्था तथा प्रागनुभवों के आधार पर करती है। यह सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक मान्यताओं का समुच्च है जो चिरकाल से प्रचलित मान्यताओं और व्यवस्था के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है। यह विचारधारा नए और बिना आजमाए हुए विचारों और संस्थाओं को अपनाने के बजाय पुराने और आजमाए हुए विचारों और संस्थाओं को कायम रखने का समर्थन करती है। डेविड ह्यूम और एडमंड बर्क रूढ़िवाद के प्रमुख उन्नायक माने जाते हैं। समकालीन विचारकों में माइकेल ओकशॉट को रूढ़िवाद का प्रमुख सिद्धांतकार माना जाता है।

रूढ़िवाद देश की प्रमुख सामाजिक समस्याओं में से है जिनके कारण जनमानस में अकर्मण्यता घर कर जाती है और वे भाग्यवादी हो जाते हैं और देश की प्रगति में बाधक बनते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो इसका पूर्ण प्रभाव है ही साथ–साथ शहरों व महानगरों में भी ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है। देश ने औद्योगिक विकास की दृष्टि से विशेष प्रगति की है। विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में आज हम अग्रणी देशो में गिने जाते हैं परंतु यह हमारे लिए दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज भी छुआ–छुत, जातिवाद, भाइ–भतीजावाद जैसी सामाजिक विषमताएँ पनप रही हैं। ये रूढ़िवादिता राष्ट्र के विकास की अवरोधक है। ये सामाजिक विषमताएँ तथा उनसे उत्पन्न कुरीतियाँ तब तक दूर नहीं की जा सकती जब तक कि हम उनके मूल कारणों तक नहीं पहुँचते व देश में व्याप्त अशिक्षा, निर्धनता तथा बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित नहीं कर लेते हैं।

रूढ़िवाद की जड़ें इतनी गहरी हैं कि इन्हें सामूहिक प्रयासों द्वारा ही दूर किया जा सकता है। केवल सरकार या प्रशासन इसे रोकने में सक्षम नहीं है। इसके लिए सभी संप्रदायों, धार्मिक संस्थानों तथा समाजसेवियों को एकजुट होकर प्रयास करना होगा। तभी देश में व्याप्त सामाजिक रूढ़िवादिता से मुक्ति की कल्पना की जा सकती है। संसार के कोने–कोने में चाहे वह मध्य हो या असभ्य अथवा पिछड़ा हुआ हो, समान या आंशिक रूप से रूढ़िवाद से प्रभावित हैं। रूढ़िवाद से दूर शिक्षा एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव से लोग प्रभावित होते हैं।

जिन कार्यो को भाग्य, अवसर, तंत्र–मंत्र, टोने–टोटके के ऊपर निर्भर रहकर किया जाता है, वे सब रूढ़िवाद की सीमा में आते हैं। जब मानव अपनी सीमित बुद्धि से परे कोई काम देखता है तब तुरंत वह किसी अज्ञात दैवी शक्ति पर विश्वास करने लगता है और अपनी सहायता के लिए उसका आवाहन करता है, भले ही वह अज्ञात दैवी–शक्ति उसके अंदर की ज्योति हो, फिर भी इसको सोचने–विचारने का उनके पास समय या बुद्धि है ही कहाँ? सफलता प्राप्त होने पर संपूर्ण श्रेय उसके परिश्रम को न मिलकर उसी अज्ञात शक्ति या भाग्य को दिया जाता है। इस प्रकार विवेकशून्यता और भाग्वादिता द्वारा पोषण पाकर रूढ़िवाद मजबूत होते जाते हैं। जहाँ मूर्खता का साम्राज्य होता है वहाँ रूढ़िवाद की तानाशाही खूल

चलती है। प्रगतिशील और वैज्ञानिक प्रकाश से आलोकित भारत में भी किसी न किसी तरह के रूढ़िवाद प्रचलित है।

रूढ़िवाद के प्रकार

रूढ़िवाद कई प्रकार के होते हैं– कुछ जातिगत होते हैं, कुछ धर्म संबंधी होते हैं, कुछ सामाजिक होते हैं और कुछ तो ऐसे विश्वव्यापी होते हैं कि सभी देशवासी उनका स्वागत करते हैं। दुर्भाग्य से अधिकांश भारतीय जादू–टोना, तंत्र–मंत्र एवं भाग्य पर पूर्ण विश्वास रखते हैं और इन विश्वासों की नींव इतनी गहरी है कि उसे उखाड़ना आसान नहीं है। यात्रा में चलते समय, हल जोतते समय, खेत काटते समय, विद्यापाठ प्रारंभ करते समय यहाँ तक कि सोते–जागते भारतवासी रूढ़िवादिता का अनुसरण करते हैं।

रूढ़िवादिता की जड़ें अज्ञानता में फैली होती है। यह हमारे भय, निराशा, असहायता व ज्ञान की कमी को दर्शाता है। रूढ़िवाद किसी विशेष समाज या देश से नहीं जुड़े हैं बल्कि यह हर जगह पाए जाते हैं। रूढ़िवाद में आस्था रखने वालों में अधिकतर गरीब, अनपढ़ व निचले तबके के लोग है। विभिन्न युगों में रूढ़िवाद और आधुनिक दोनों प्रवृतियों के विकास का कारण यह है कि मनुष्य अलग–अलग सामाजिक दायरों में सोचता व कार्य करता है।

रूढ़िवादी समाज के अन्तर्गत व्यक्तियों के बीच आपसी संबंधों एवं हितों के स्वरूप में काफी फैलाव होता है। व्यक्ति अपने स्वार्थो से उतना अधिक बंधा हुआ नहीं होता है। माँ–बेटे के बीच का संबंध इसका एक उदाहरण है। माँ बेटे के बीच का संबंध काफी विस्तृत और निःस्वार्थपूर्ण होता है। प्राचीन समाज भी एक अच्छा उदाहरण हो सकता है, जहाँ संभवतः लोगों के आपसी संबंधों में व्यक्तिगत स्वार्थो की उतनी प्रधानता नहीं होती थी। व्यक्ति अपने स्वार्थो से ऊपर उठाकर समस्त सामाजिक व्यवस्था के हित की बात ज्यादा सोचता था। दूसरे शब्दों में सभी के स्वार्थ की पूर्ति में ही लोगों का आना स्वार्थ पूरा होता था।

दूसरी तरफ आधुनिक समाज में लोग साधारणतया काफी स्वार्थी होते हैं। संबंधों का स्वरूप काफी औपचारिक होता है। सामान्य तौर पर लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थो का ध्यान में रखकर ही किसी सामाजिक भूमिका या जिम्मेवारी का निंवाहन करते हैं। वर्तमान समय में हर एक काम लोग स्वार्थ या लाभ को ध्यान में रखकर करते हैं।

रूढ़िवादी समाज के अन्तर्गत व्यक्तियों के व्यवहार काफी पक्षपातपूर्ण होते हैं। लोगों के व्यवहार संकीर्ण विचारों से प्रभावित होते हैं। परिवार के सदस्यों के बीच का संबंध इसका उदाहरण हो सकता है। परिवार के सदस्यों के बीच का संबंध इस रूप में काफी पक्षपातपूर्ण होता है कि परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के हितों की हिफाजत इस हद तक करते हैं कि उन्हें अपने लोगों में कोई दोष या कमी भी दिखाई नहीं पड़ती है। वृहत्तर स्तर पर भाई–भतीजावाद, जातिवाद तथा क्षेत्रीयता इसके उदाहरण है। लोग अपने परिवार, जाति एवं प्रदेश के हितों की हिफाजत के लिए दूसरों के साथ अन्याय करने में नहीं हिचकते हैं।

आधुनिक शिक्षा का रूढ़िवादिता पर प्रभाव

दूसरी तरफ आधुनिक शिक्षा के कारण आज समाज मे बहुत समानता एवं न्यायपूर्ण व्यवहार होता है, जैसे–कानून की नजर में चपरासी तथा प्रधानमंत्री बिल्कुल बराबर है। न्यायालय या प्रशासन किसी के पद या पैसे से प्रभावित न होकर हर नागरिक को एक तरह से देखने का प्रयास करता है।

रूढ़िवादी समाज के अन्तर्गत व्यक्तियों का व्यवहार भावनाओं से अधिक प्रभावित होता है। लोग किसी न किसी प्रकार की भावनाओं से प्रभावित होकर कार्य करते हैं। कभी तो लोग की भावनाएँ जाति के आधार, कभी धर्म के आधार, कभी भाषा के आधार, कभी क्षेत्र के आधार पर किसी अन्य प्रकार की संकीर्ण भावनाओं से प्रभावित होती हैं।

आधुनिक शिक्षा ने लोग को अपने जज्बातों पर नियंत्रण रखने की सीख प्रदान की है। किसी निर्णय पर पहुँचने के पहले तर्क का इस्तेमाल करने लगे हैं। आधुनिक समय में लोग शायद ही किसी काम को भावनावश करता है। चिन्तन का स्वरूप काफी वैज्ञानिक तथा तार्किक हो गया है। लोग किसी चीज को तटस्थ भाव से देखने का प्रयास करते हैं। जैसे जनता यदि जाति, धर्म या भाषा आदि को न देखकर विभिन्न दलों के

गुणों को देखकर चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करती है तो इसे भावनात्मक निष्पक्षता कहा जाता है। रूढ़िवादिता एवं सामाजिक परिवर्तन से जुड़े तथ्यों को यहाँ उपस्थापित किया जा रहा है:

तालिका 1
शिक्षा के कारण व्यक्ति द्वारा धर्म का अंधानुकरण करने से परहेज करने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	धर्म	अभिमत		कुल (प्रतिशत)
		हाँ	नहीं	
1.	हिन्दू	137 (45.67)	22 (07.33)	159 (53)
2.	मुस्लिम	111 (37.00)	30 (10.00)	141 (47)
3.	कुल	248 (82.67)	52 (17.33)	300 (100)

क्षेत्रीय अध्ययन में सम्मिलित 82.67 प्रतिशत उत्तरदाता जिनमें हिन्दू धर्म के 137 तथा मुस्लिम धर्म के 111 उत्तरदाता इस बात से सहमत है कि शिक्षा के कारण व्यक्ति के विचारों में प्रगति होती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति धर्म का अंधानुकरण करने से परहेज करता है, जबकि इस संदर्भ में 29.71 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक जबाव दिया।

तालिका 2
आधुनिक शिक्षा के कारण सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक विचारों में बदलाव आने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	धर्म	अभिमत		कुल (प्रतिशत)
		हाँ	नहीं	
1.	हिन्दू	150 (50.00)	09 (03.00)	159 (53)
2.	मुस्लिम	90 (30.00)	51 (17.00)	141 (47)
3.	कुल	248 (80.00)	60 (20.00)	300 (100)

तालिका संख्या 2 के अनुसार अधिकांश उत्तरदाता मानते है कि आधुनिक शिक्षा के कारण सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक विचारों में बदलाव आया है। शिक्षा के कारण लोग समाज तथा परिवार में व्याप्त परम्परागत एवं रूढ़िवादी सांस्कृतिक विचारों को दरकिनार कर रहे हैं और नये विचारों का अनुसरण कर रहे है। आज पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना में काफी बदलाव आया है। लोग आत्म केन्द्रित होते जा रहे है। तर्क के कसौटी पर कसकर ही लोग परंपरागत विचारों को मानते हैं। आज वैज्ञानिक सोच के आधार पर लोग अपना जीवन यापन चलाते है। 20 प्रतिशत उत्तरदाता इससे सहमत नहीं थे।

तालिका 3
शिक्षा के कारण आज समाज में बहुत समानता एवं न्यायपूर्ण व्यवहार होने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	धर्म	अभिमत		कुल (प्रतिशत)
		हाँ	नहीं	
1.	हिन्दू	153 (51.00)	06 (02.00)	159 (53)
2.	मुस्लिम	120(40.00)	21 (07.00)	141 (47)
3.	कुल	273 (91.00)	27 (09.00)	300 (100)

अध्ययन के क्रम में सम्मिलित 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार शिक्षा के कारण आज समाज में बहुत समानता एवं न्यायपूर्ण व्यवहार होता है, जैसे कानून की नजर में चपरासी तथा प्रधानमंत्री बिल्कुल बराबर है। न्यायालय या प्रशासन किसी के पद या पैसे से प्रभावित न होकर हर नागरिक को एक तरह से

देखने का प्रयास करता है, जबकि इस संदर्भ में 09 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि आज भी समाज में असमानता एवं अन्यायपूर्ण व्यवहार देखे जा सकते हैं। क्षेत्रीय अध्ययन में 153 हिन्दू उत्तरदात्ता तथा 120 मुस्लिम उत्तरदाता का मानना है कि शिक्षा के कारण आज समाज में समानता एवं न्यायपूर्ण व्यवहार होता है।

तालिका 4
शिक्षा के कारण भारतीय समाज का परम्परागत ढांचा परिवर्तित होने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र0सं0	धर्म	अभिमत		कुल (प्रतिशत)
		हाँ	नहीं	
1.	हिन्दू	132 (44.00)	27 (09.00)	159 (53)
2.	मुस्लिम	117 (39.00)	24 (08.00)	141 (47)
3.	कुल	249 (83.00)	51 (17.00)	300 (100)

उपर्युक्त तालिका अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 83 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि समाज की संरचना, व्यवस्था, संगठन, संस्थायें आदि अपने मूल स्वरूप से हटती जा रही है। इसका मुख्य कारण शिक्षा का प्रवेश तीव्रता से समाज में हो रहा है। परिणामस्वरूप भारतीय समाज का परम्परात्मक ढांचा परिवर्तित होता जा रहा है। परंपरा, प्रथा, रीति–रिवाज, धार्मिक क्रियाकलाप आदि सभी क्षेत्रों में परिवर्तन दिखाई पड़ रहे है। नातेदारी व्यवस्था में बदलाव आया है। रिश्तेदार एवं नातेदार की भूमिकाओं में काफी परिवर्तन हुए है, जबकि इस संदर्भ में 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक जबाव दिया।

निष्कर्ष

बदलाव शास्वत है। बदलाव सीमाओं से बंधा नहीं है। आधुनिक शिक्षा का प्रभाव भारतीय समाज पर भी पड़ रहा है। समाज की संरचना, व्यवस्था, संगठन, संस्थायें आदि अपने मूल स्वरूप से हटती जा रही है। इसका मुख्य कारण शिक्षा का प्रवेश तीव्रता से समाज में हो रहा है। परिणामस्वरूप भारतीय समाज का परम्परात्मक ढांचा परिवर्तित होता जा रहा है। इतना ही नहीं धर्म से जुड़े विश्वास, मान्यतायें, मूल्य, आस्थायें आदि में भी बदलाव आते दिख रहे है। वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा के कारण समाज में व्याप्त रूढ़िवादी जाति–प्रथा संयुक्त परिवार की प्रणाली, विवाह–पद्धतियाँ, स्त्री–जीवन, यौन–आकर्षण, प्रथाओं और परम्पराओं में परिवर्तन हुआ है।

संदर्भः

1. गवा, ओम प्रकाश (2010): राजनीतिक सिद्धांत की रूपरेखा, मयूर पेपरबैक्स, पृ0 26
2. शर्मा, रामविलास (1986): मार्क्स त्रोत्स्की और एशियाई समाज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 69
3. सांकृत्यायन, राहुल (1954): कार्ल मार्क्स, किताब महल, इलाहाबाद, पृ0 73
4. शोभा, सावित्री चन्द्र (1976): समाज और संस्कृति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 32
5. ओरो, रेमों (1967): मेन करंट्स इन सोशियोलॉजिक थॉट, वोल्यूम, 2, पेंगुइन बुक्स, लंदन, पृ0 68
6. मुखर्जी, आर. एन. (1997): एन आउट लाईन ऑफ साइकोलॉजी, किताब महल, इलाहाबाद, पृ0 265
7. दुबे, श्यामाचरण (1975): परंपरा इतिहास बोध और संस्कृति, भारतीय नेशनलप पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ0 57
8. मुखर्जी, राधाकमल (1955): दी सोशल स्ट्रक्चर ऑफ वेल्यूज, मैकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लंदन पृ0 320